BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

‘नेचुरोपैथी’: स्वस्थ भारत के लिए प्राकृतिक उपचार

देश भर में उपचार, प्रशिक्षण, अनुसंधान और देखभाल

17 नवंबर 2026

प्राकृतिक चिकित्सा (नेचुरोपैथी) एक दवा-मुक्त और किफायती प्रणाली है जो आहार, उपवास, जल, मिट्टी, मालिश और प्राकृतिक जीवन के माध्यम से शरीर को स्वयं ठीक करने में मदद करती है। भारत 18 नवंबर को ‘राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा दिवस’ मनाता है, और इसका 9वां संस्करण 'प्राकृतिक चिकित्सा, स्वस्थ भारत' विषय के तहत कर्नाटक के नागमंगला में आयोजित किया जाएगा। पुणे स्थित राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान 'निसर्ग ग्राम' चलाता है, जो 250 बिस्तरों वाला एक प्राकृतिक चिकित्सा अस्पताल है। साथ ही, यह केंद्र सरकार के अंतर्गत 'बैचलर ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगिक साइंसेज' (बीएनवाईएस) का पहला कॉलेज भी है।

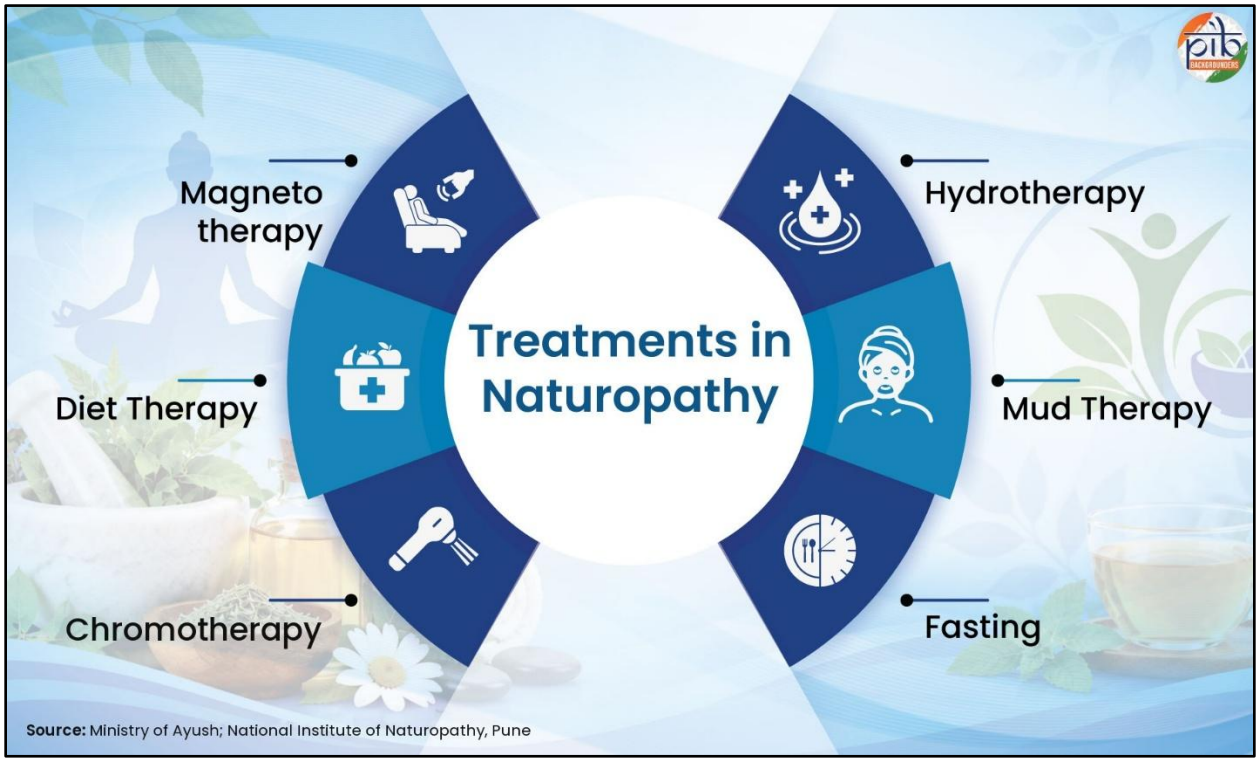
प्रकृति से उपचार

प्राकृतिक चिकित्सा एक सरल विचार पर आधारित है: शरीर में खुद को ठीक करने की ताकत होती है। कई संस्कृतियों की पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों से जुड़ी यह एक किफायती और दवा-मुक्त प्रणाली है, जिसमें स्वास्थ्य देखभाल और स्वस्थ जीवन के लिए प्राकृतिक चीजों का उपयोग किया जाता है। यह प्रकृति के पांच तत्वों—पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश—की मदद से शरीर की अपनी जीवन-शक्ति को बढ़ाकर काम करती है।

प्राकृतिक चिकित्सा, प्राकृतिक उपचार की एक पद्धति है और साथ ही जीवन जीने का एक ढंग भी है। यह 'प्रकृति की ओर लौटो' का आह्वान करती है: इसमें सादा खाना और जीवन जीने का तरीका तथा स्वयं, समाज और पर्यावरण के साथ संतुलित जीवन शामिल है। इसमें स्वास्थ्य को बेहतर बनाने, रोगों की रोकथाम, उनका उपचार करने और ठीक होने में मदद करने की क्षमता है।

प्राकृतिक चिकित्सा में उपचार

एक प्राकृतिक चिकित्सक (नेचुरोपैथ) प्रकृति की दी हुई चीजों से उपचार करते हैं: जैसे उपवास और आहार, हाइड्रोथेरेपी (पानी से उपचार), मड पैक, कोल्ड पैक, स्नान और मालिश। राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान के पुणे परिसर, 'निसर्ग ग्राम' में उपचार अनुभागों के अंतर्गत मैग्नेटोथेरेपी (चुंबक से उपचार), क्रोमोथेरेपी (रंग चिकित्सा) और फिजियोथेरेपी की सुविधा भी उपलब्ध है। इसके अलावा, यहां एक योग हॉल और सात्विक आहार केंद्र भी है।



प्राकृतिक चिकित्सा किन रोगों में कारगर है

प्राकृतिक चिकित्सा को पुरानी बीमारियों, एलर्जी, ऑटोइम्यून, शरीर के अंगों के क्षय से जुड़ी समस्याओं और तनाव से संबंधित विकारों में प्रभावी बताया गया है। पोषण, प्राकृतिक चिकित्सा और जीवनशैली में बदलाव

को लेकर इसका महत्व फिर से बढ़ गया है, क्योंकि लोग जीवनशैली से जुड़े विकारों, मोटापे, तनाव और वृद्धावस्था में स्वस्थ जीवन पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। स्वस्थ आहार, शारीरिक गतिविधि, पर्याप्त आराम और तनाव प्रबंधन सभी उम्र के लोगों के लिए निवारक स्वास्थ्य देखभाल में सहायक हो सकते हैं।

भारत में प्राकृतिक चिकित्सा और योग

भारत में प्राकृतिक चिकित्सा (नेचुरोपैथी) योग से जुड़ी हुई है। राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान के अनुसार, भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा में योग के साथ-साथ स्वास्थ्य और रोग को समझने की 'पंचभूत' जैसी प्राचीन भारतीय अवधारणाएं भी शामिल हैं। समय के साथ, यह एक संपूर्ण पद्धति के रूप में विकसित हुई है जो रोगों का उपचार और रोकथाम करती है और लोगों को प्रकृति के करीब रहकर स्वस्थ जीवन जीना सिखाती है। आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी के साथ-साथ, योग और प्राकृतिक चिकित्सा को भी 'आयुष' प्रणालियों में एक साथ शामिल किया गया है। प्राकृतिक चिकित्सा पर राष्ट्रीय सम्मेलन (2026) में, आयुष मंत्रालय ने दोहराया कि योग और प्राकृतिक चिकित्सा एक-दूसरे के पूरक हैं। सरकार ने इस संयोजन के इर्द-गिर्द एक पूरी व्यवस्था तैयार की है: एक ऐसी डिग्री जो प्राकृतिक चिकित्सा को योग विज्ञान के साथ जोड़ती है; दोनों के लिए एक अनुसंधान परिषद - 'सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन योग एंड नेचुरोपैथी' (सीसीआरवाईएन); चिकित्सकों का केंद्रीय पंजीकरण; और देश का पहला राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा अस्पताल।

9वां राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा दिवस: प्राकृतिक चिकित्सा, स्वस्थ भारत

9वां राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा दिवस 18 नवंबर 2026 को कर्नाटक के नागमंगला स्थित केंद्रीय योग और प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (सीआरआईवाईएन) में मनाया जाएगा। इसका विषय 'प्राकृतिक चिकित्सा, स्वस्थ भारत' है, जो बीमारी से बचाव को प्राथमिकता देता है। इसमें संतुलित आहार, शारीरिक गतिविधि, योग और तनाव प्रबंधन पर जोर दिया गया है, साथ ही मोटापे को रोकने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह आयोजन प्रधानमंत्री के 'फिट और स्वस्थ भारत' के विजन के अनुरूप है। केंद्रीय आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री प्रतापराव जाधव ने कहा:

> *""प्राकृतिक चिकित्सा हमें जीवनशैली, प्रकृति और संपूर्ण स्वास्थ्य के बीच के गहरे संबंध को समझने के लिए प्रेरित करती है। हमारा जोर विश्वसनीय अनुसंधान, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और पारंपरिक स्वास्थ्य सेवा के साथ जिम्मेदारीपूर्ण एकीकरण के माध्यम से इसके वैज्ञानिक आधार को मजबूत करने पर है।"*

महात्मा गांधी और प्राकृतिक चिकित्सा दिवस की शुरुआत

प्राकृतिक चिकित्सा दिवस, महात्मा गांधी के प्रकृति चिकित्सा के संकल्प को समर्पित है। 18 नवंबर 1945 को, वे पुणे स्थित ऑल इंडिया नेचर क्योर फाउंडेशन ट्रस्ट के आजीवन अध्यक्ष बने और उन्होंने इसकी डीड पर हस्ताक्षर किए। आयुष मंत्रालय ने हर साल 'प्राकृतिक चिकित्सा दिवस' मनाने की तारीख की घोषणा की, जिसकी शुरुआत 2018 में हुई। गांधी जी को भारत में प्राकृतिक चिकित्सा का संस्थापक माना जाता है। 1946 में, उन्होंने पुणे के पास उरुली कंचन नामक गांव में प्राकृतिक चिकित्सा अभियान का नेतृत्व किया। उसी वर्ष, उन्होंने लिखा:

> *"मेरा मानना है कि जहां व्यक्तिगत, घरेलू और सार्वजनिक स्वच्छता के नियमों का सख्ती से पालन किया जाता है, और आहार व व्यायाम के मामले में उचित सावधानी बरती जाती है, वहां बीमारी या रोग के लिए कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। जहां पूर्ण आंतरिक और बाहरी पवित्रता हो, वहां बीमारी का होना असंभव है। यदि गांव के लोग इस बात को समझ लें, तो उन्हें डॉक्टरों, हकीमों या वैद्यों की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।" (हरिजन, 26 मई 1946)*

राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान और निसर्ग ग्राम

पुणे स्थित राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन) की स्थापना 22 दिसंबर 1986 को हुई। यह उस नेचर क्योर सेंटर में स्थित है, जिसे 17 मार्च 1975 को भारत सरकार को सौंपा गया। इसका मुख्यालय, 'बापू भवन' महात्मा गांधी के नाम पर रखा गया है। एनआईएन, आयुष मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्त निकाय है और इसक शासी निकाय के प्रमुख केंद्रीय आयुष मंत्री होते हैं। एनआईएन निम्नलिखित कार्य करता है:

- प्राकृतिक चिकित्सा और योग के क्षेत्र में मौजूदा ज्ञान के मानकीकरण और प्रसार के लिए सुविधाएं प्रदान करना और उन्हें प्रोत्साहित करना;
- नेचर क्योर यूनिवर्सिटी की स्थापना करके प्राकृतिक चिकित्सा और योग में गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण और शिक्षा को बढ़ावा देना;
- मानव स्वास्थ्य के सभी पहलुओं पर अनुसंधान करना, सुविधा प्रदान करना और प्रोत्साहित करना; और
- महात्मा गांधी का एक जीवंत स्मारक स्थापित करना।

एनआईएन सामान्य जरूरतों के लिए विशेष बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी) क्लीनिक चलाता है जिसमें प्रसव पूर्व और पश्चात स्वास्थ्य के लिए 'मैटरनल केयर ओपीडी'; आहार, योग और जीवनशैली में बदलाव के माध्यम से काम करने वाली 'डायबिटीज ओपीडी'; तथा तनाव और चिंता के लिए योग, ध्यान और रिलैक्सेशन के माध्यम से काम करने वाली 'माइंड-बॉडी मेडिसिन ओपीडी' शामिल है।

निसर्ग ग्राम

25 फरवरी 2024 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पुणे में राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन) के नए परिसर 'निसर्ग ग्राम' का उद्घाटन किया। 25 एकड़ में फैले और 213.55 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित इस परिसर में 250 बिस्तरों वाला अस्पताल, अनुसंधान एवं विस्तार सेवा केंद्र तथा स्नातक, स्नातकोत्तर और पैरामेडिकल पाठ्यक्रमों के लिए एक नेचुरोपैथी मेडिकल कॉलेज शामिल है। यह देश का पहला राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा अस्पताल है, जहां जीवनशैली संबंधी चयापचय (मेटाबॉलिक) विकारों का प्राकृतिक उपचार किया जा सकता है।

निसर्ग ग्राम एक नजर में

परिसर: 25 एकड़, येवलेवाडी, पुणे

लागत: 213.55 करोड़ रुपये

अस्पताल: 250 बिस्तर, पहला राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा अस्पताल

कॉलेज: नेचुरोपैथी मेडिकल कॉलेज, वर्ष 2026-27 में 100 बीएनवाईएस सीटों के साथ

सुविधाएं: योग हॉल, सात्विक आहार केंद्र, हाइड्रोथेरेपी, मैग्नेटोथेरेपी, क्रोमोथेरेपी, मालिश और फिजियोथेरेपी।

जनजातीय समुदायों तक पहुंचना

महाराष्ट्र सरकार के जनजातीय विकास विभाग के सहयोग से, एनआईएन ने पुणे जिले के आंबेगांव तालुका के गोहे (बुद्रुक) में जनजातीय लोगों के लिए 'निसर्ग आरोग्य साधना केंद्र' की स्थापना की है। यह पूरी तरह से सुसज्जित योग और प्राकृतिक चिकित्सा अस्पताल है। इस यूनिट में 20 बिस्तर हैं, पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग वार्ड हैं, एक योग हॉल है और एक आहार केंद्र है। इसका उद्देश्य स्थानीय संसाधनों के माध्यम से समुदाय की पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करना और प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से एक आत्मनिर्भर स्वास्थ्य देखभाल मॉडल प्रदान करना है। यह यूनिट एक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में भी काम

करती है, जहां जनजातीय युवा प्राकृतिक चिकित्सा और योग के कौशल सीखते हैं और उन्हें अपने स्वास्थ्य के लिए अपनाते हैं। इसके 'उपचार सहायक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम' में हर वर्ष 40 जनजातीय छात्रों के दाखिले की क्षमता है।

प्राकृतिक चिकित्सा प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर जीने पर जोर देती है। यह बात जनजातीय समुदायों के साथ मेल खाती है; प्रकृति के प्रति उनके ज्ञान और उनके तालमेल को हर साल 'जनजातीय गौरव दिवस' पर मान्यता दी जाती है। यह दिवस 15 नवंबर को मनाया जाता है, जो भगवान बिरसा मुंडा की जयंती है। सरकार इस दिशा में काम कर रही है। 16 जनवरी 2026 को, जनजातीय कार्य मंत्रालय ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) और आयुष मंत्रालय के साथ मिलकर हैदराबाद में जनजातीय चिकित्सकों के लिए एक राष्ट्रीय क्षमता-निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया। इसका उद्देश्य इन चिकित्सकों को जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को लोगों तक पहुंचाने के लिए सामुदायिक स्तर के साझेदार के रूप में शामिल करना था। मंत्रालय ने एक लाख जनजातीय चिकित्सकों को मान्यता दिलाने का राष्ट्रीय लक्ष्य निर्धारित किया है। 'जनजातीय गौरव पखवाड़ा 2026' के दौरान, 1 और 2 नवंबर को हैदराबाद में एक क्षमता-निर्माण सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें 9 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लगभग 1,500 पारंपरिक चिकित्सकों को प्रशिक्षण के लिए एक साथ लाया गया।

नेचुरोपैथ्स की नई पीढ़ी को प्रशिक्षित करना

एक विकसित होती हुई प्रणाली को प्रशिक्षित डॉक्टरों की आवश्यकता है और सरकार ने उनके लिए एक स्पष्ट दिशा तय की है।

बीएनवाईएस डिग्री

एनआईएन देश का पहला केंद्रीय सरकारी संस्थान है जो नई दिल्ली स्थित केंद्रीय विश्वविद्यालय, 'श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय' से संबद्ध होकर 'बैचलर ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगिक साइंसेज' (बीएनवाईएस) प्रोग्राम चलाता है। बीएनवाईएस का छात्र साढे पांच साल तक परिसर में रहता है: इसमें साढ़े चार साल का शैक्षणिक और नैदानिक प्रशिक्षण होता है, जिसके बाद एक साल की अनिवार्य रोटेटरी रेजिडेंशियल इंटर्नशिप पूरी करनी होती है। शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए 'निसर्ग ग्राम' में 100 सीटें उपलब्ध हैं, और कक्षाएं 30 नवंबर 2026 से शुरू होंगी।

1 अप्रैल 2024 तक, देश भर में 71 प्राकृतिक चिकित्सा स्नातक कॉलेजों में 5,214 छात्रों की प्रवेश क्षमता थी, जबकि 6 स्नातकोत्तर कॉलेजों में 144 छात्रों की क्षमता थी। 1 जनवरी 2024 तक, 5,083 प्राकृतिक चिकित्सा चिकित्सक राज्य बोर्डों और परिषदों में पंजीकृत थे।

केंद्रीय पंजीकरण (सेंट्रल रजिस्ट्रेशन)

आयुष मंत्रालय के अधीन एनआईएन द्वारा स्थापित नेचुरोपैथी रजिस्ट्रेशन बोर्ड (एनआरबी) प्राकृतिक चिकित्सा चिकित्सकों का केंद्रीय पंजीकरण करता है और संस्थानों तथा अस्पतालों को मान्यता देता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों के बीएनवाईएस स्नातक इसके केंद्रीय पंजीकरण प्रमाण पत्र हेतु आवेदन कर सकते हैं।

स्व-देखभाल के लिए पाठ्यक्रम

एनआईएन अल्प अवधि के कौशल विकास पाठ्यक्रम भी संचालित करता है। एक्यूप्रेशर, प्राकृतिक चिकित्सा और प्राकृतिक चिकित्सा पाक-कला के पाठ्यक्रम मुख्य रूप से स्व-सहायता के लिए होते हैं, ताकि लोग 'स्व-स्वास्थ्य आत्मनिर्भरता' के ध्येय वाक्य के तहत स्वयं का और अपने परिवार के स्वास्थ्य का ध्यान रख सकें। मालिश, फिटनेस ट्रेनिंग और योग के पाठ्यक्रम लोगों को पेशेवर रूप से आत्मनिर्भर बनने में मदद करते हैं।

साक्ष्य आधारित अनुसंधान और नए अस्पताल

अनुसंधान प्राकृतिक चिकित्सा (नेचुरोपैथी) को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। आयुष मंत्रालय के सचिव श्री वैद्य राजेश कोटेचा ने कहा:

> *"प्राकृतिक चिकित्सा की विश्वसनीयता को बढ़ाने और इसके व्यापक उपयोग के लिए वैज्ञानिक प्रमाणन आवश्यक है। सीसीआरवाईएन और अन्य संस्थानों के माध्यम से, हम व्यवस्थित अनुसंधान, नैदानिक मूल्यांकन और सहयोग को बढ़ावा दे रहे हैं, ताकि प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों का उचित वैज्ञानिक तरीकों से आकलन किया जा सके और उन्हें जिम्मेदारीपूर्ण स्वास्थ्य देखभाल के तरीकों के रूप में अपनाया जा सके।"*

अनुसंधान परिषद, संस्थान और अस्पताल

आयुष मंत्रालय द्वारा पूर्णतः वित्तपोषित ' केंद्रीय योग और प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद' (सीसीआरवाईएन) वर्ष 1978 से योग और प्राकृतिक चिकित्सा में अनुसंधान, प्रचार-प्रसार और विकास कार्य

कर रही है। भारत भर में इस परिषद की 22 इकाइयां हैं। मंत्रालय की पांच अनुसंधान परिषदों ने मिलकर वर्ष 2025-26 के दौरान 653 शोध पत्र प्रकाशित किए।

भारत में अब हरियाणा के झज्जर और कर्नाटक के नागमंगला में 200 बिस्तरों वाले योग और प्राकृतिक चिकित्सा अस्पताल हैं। इसके साथ ही, यहां योग और प्राकृतिक चिकित्सा की शिक्षा और अनुसंधान के लिए स्नातकोत्तर संस्थान भी हैं। झज्जर स्थित सीआरआईवाईएन, जो 19 एकड़ में 63.88 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित एक शीर्ष अनुसंधान और शिक्षा सुविधा है, का उद्घाटन प्रधानमंत्री ने 25 फरवरी 2024 को किया था–उसी दिन 'निसर्ग ग्राम' का भी उद्घाटन किया गया था। 2024 में, प्रधानमंत्री ने ओडिशा के खोरदा व छत्तीसगढ़ के रायपुर में दो और सीआरआईवाईएन का शिलान्यास भी किया। 1 अप्रैल 2024 तक, देश भर के 35 अस्पतालों (जिनमें कुल 1,663 बिस्तर हैं) और 95 औषधालयों में प्राकृतिक चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध है।

राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन) में एक समर्पित अनुसंधान विभाग और स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के साथ पंजीकृत एक इंस्टीट्यूशनल एथिक्स कमेटी भी है। यह अनुसंधान पद्धति कार्यशालाएं, गुड क्लिनिकल प्रैक्टिस ट्रेनिंग, अवलोकन अध्ययन, व्यवस्थित समीक्षा और सहयोगात्मक अनुसंधान का संचालन करती है। इसके मौजूदा इन-हाउस अध्ययनों में उपवास के विभिन्न तरीकों, हिप बाथ और वेट शीट पैक, टाइप 2 मधुमेह पर धूप के प्रभाव, एक एकीकृत प्राकृतिक चिकित्सा व योग कार्यक्रम और गट माइक्रोबायोटा (आंत में रहने वाले सूक्ष्मजीव) पर इसके प्रभाव, और घुटने के ऑस्टियोआर्थराइटिस के लिए प्राकृतिक चिकित्सा और योग जैसे विषयों पर ध्यान दिया जा रहा है।

भारत की पारंपरिक पद्धतियों और विश्व

भारत में विदेशों से आने वाले मरीजों की संख्या बढ़ रही है। विभिन्न प्रकार के उपचार के लिए भारत आने वाले विदेशी मरीजों की संख्या 2020 के 1,82,945 से बढ़कर 2024 में 6,44,387 हो गई है, जिसमें योग, आयुर्वेद और वेलनेस-आधारित चिकित्सा पद्धतियों का बड़ा योगदान है। विदेशी मरीज अब पुरानी बीमारियों, जीवनशैली संबंधी विकारों, पुनर्वास और वेलनेस कार्यक्रमों के लिए भारत की पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों–जैसे आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी–को तेजी से अपना रहे हैं।

भारत का वेलनेस टूरिज्म योग, आयुर्वेद और नेचुरोपैथी जैसी पारंपरिक पद्धतियों के माध्यम से निवारक और संपूर्ण स्वास्थ्य पर केंद्रित है। ऐसी स्वास्थ्य-देखभाल तक पहुंच आसान बनाने के लिए, सरकार ने 27

जुलाई 2023 को विदेशी नागरिकों और उनके अटेंडेंट के लिए एक खास आयुष वीज़ा शुरू किया, जो आयुष प्रणाली के तहत इलाज करवाना चाहते हैं। प्रधानमंत्री ने अप्रैल 2022 में गांधीनगर में आयोजित ग्लोबल आयुष इन्वेस्टमेंट एंड इनोवेशन समिट में इस वीज़ा की घोषणा की थी। यह भारत की हील इन इंडिया पहल के रोडमैप का हिस्सा है, जो भारत को मेडिकल वैल्यू ट्रैवल के एक गंतव्य-देश के रूप में बढ़ावा देती है। फरवरी 2026 के केंद्रीय बजट में घोषित पांच प्रस्तावित 'रीजनल मेडिकल वैल्यू टूरिज्म हब' में आयुष केंद्र भी शामिल होंगे। इन केंद्रों में आधुनिक चिकित्सा उपचार के साथ-साथ पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियां, वेलनेस सेवाएं और पुनर्वास सुविधाएं एक साथ उपलब्ध होंगी।

प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ावा

प्राकृतिक चिकित्सा (नेचुरोपैथी) सरल तरीकों- अच्छा भोजन, आराम, शारीरिक गतिविधि और प्रकृति की उपचार शक्ति- पर आधारित है। भारत ने इस पद्धति को एक राष्ट्रीय संस्थान और पहला राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा अस्पताल दिया है। इसके अलावा, यहां एक केंद्रीय विश्वविद्यालय के अंतर्गत डिग्री, अनुसंधान संस्थान और अस्पताल, केंद्रीय पंजीकरण, और देश भर के स्वास्थ्य केंद्रों में 'आयुष' देखभाल की सुविधा भी उपलब्ध है। 18 नवंबर 2026 को नागमंगला में 9वें राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा दिवस के अवसर पर, 'प्राकृतिक चिकित्सा, स्वस्थ भारत' के विजन के तहत हर आयु वर्ग के लिए संतुलित आहार, शारीरिक गतिविधि, योग और स्वस्थ जीवन पर जोर दिया जाएगा।

संदर्भ

आयुष मंत्रालय

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2335313
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2217203
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2222044
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1945070
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2319947
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2224733
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2209263
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2087319
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2008908
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1987900
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2178490
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1678010
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1674434
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1660260
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1697470

https://sansad.in/getFile/lsapps/loksabhaquestions/annex/188/AU1041_6OkVSb.pdf?source=lsapps
https://ayush.gov.in/assets/pdf/whatsnew/Approved-Ayush-in-India-2024-Single.pdf

जनजातीय कार्य मंत्रालय

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2335189
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2248346

प्रधानमंत्री कार्यालय

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206712

पीआईबी बैकग्राउंडर्स

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2257447

राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान, पुणे

https://ninpune.ayush.gov.in/#!/aboutUs
https://ninpune.ayush.gov.in/#!/missionObjectives
https://ninpune.ayush.gov.in/#!/aboutNisargGram
https://ninpune.ayush.gov.in/#!/naturopathy
https://ninpune.ayush.gov.in/#!/specialOPDs
https://ninpune.ayush.gov.in/#!/ninTribalUnit
https://ninpune.ayush.gov.in/#!/ongoingIMRprojects
https://ninpune.ayush.gov.in/#!/skillDevelopment

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

https://www.icmr.gov.in/icmrobject/static/icmr/dist/images/pdf/gandhi-and-health/Gandhi_Quote_Book_final_30092020.pdf

पीआईबी रिसर्च

पीके/केसी/आरटी/एसके